

डॉ. अगस्त कोकेल, इतिहास, सत्र 23, वफादार राजा

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 23 है, विश्वासयोग्य राजा।

हमारे पिछले सत्र में, हमने हिजकिय्याह को फसह के उत्सव के साथ छोड़ा था, और जैसा कि हमने बताया, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि, कुछ मायनों में, यह पूरे इस्राएल के साथ वाचा की बहाली थी। नई स्थिति यह है कि इस्राएल अब मौजूद नहीं है। यह हिजकिय्याह के पिता आहाज के शासनकाल के दौरान निर्वासन में चला गया।

इसलिए, बेथेल और दान के मंदिर अब काम नहीं कर रहे थे। हिजकिय्याह उत्तरी जनजातियों में से हर किसी से यरूशलेम के मंदिर में लौटने की अपील करने के लिए स्वतंत्र था। उन्हें किसी भी राजनीतिक विभाजन से बाधा नहीं थी।

इसलिए, दूत यरूशलेम आने के निमंत्रण के साथ बाहर गए, जो बहुत सफल रहा और उन्हें फसह के छुटकारे का जश्न मनाने, मिस्र से बाहर आने और उन्हें एक राष्ट्र बनाने के लिए सक्षम किया, क्योंकि वे सिनाई पर्वत पर चले गए और वहाँ दिव्य वाचा प्राप्त की। इसलिए, यह नवीनीकरण जिसमें हिजकिय्याह के तहत फसह के द्वारा सभी इस्राएल को एक छुटकारे वाले लोगों के रूप में एक साथ लाया गया है, उसके बाद मंदिर की बहाली और विरोधियों के बावजूद हिजकिय्याह की वफादारी है, और यहाँ पर इतिहासकार उस बारे में थोड़ा और बात करने जा रहा है जिससे हम राजाओं और यशायाह में बहुत परिचित हैं। राजाओं ने हिजकिय्याह को सबसे वफादार राजा कहा है, जो उसके पहले के किसी भी अन्य राजा से अधिक वफादार है।

यह 2 राजा 18, श्लोक 4 से 6 में है। यह वास्तव में एक उल्लेखनीय कथन है कि हिजकिय्याह को अपने से पहले के किसी भी अन्य राजा की तुलना में अधिक वफादार होना चाहिए क्योंकि, निश्चित रूप से, राजाओं में, दो कहानियाँ हैं जो इस बात के साथ समाप्त होती हैं कि हिजकिय्याह वास्तव में किस तरह से काफी विश्वासघाती था और जिसके परिणामस्वरूप यह तथ्य सामने आया कि यहूदा स्वयं निर्वासन में जाने वाला था। लेकिन इतिहासकार हिजकिय्याह की कहानी को इस तरह से बताता है कि वह न केवल फसह के समय राष्ट्र को एक साथ लाने के क्षेत्र में, बल्कि न केवल मंदिर के जीर्णोद्धार के क्षेत्र में बल्कि उसकी राजनीतिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी हिजकिय्याह की वफादारी को दर्शाता है। तो, हिजकिय्याह की कहानी का अगला पहलू जिसके बारे में इतिहासकार हमें बताने जा रहा है, वह है मंदिर का जीर्णोद्धार।

हिजकिय्याह ने फसह को इस तरह से बहाल किया था जैसा पहले कभी नहीं देखा गया था, और अब वह मंदिर को इस तरह से बहाल करता है जैसा उसके पहले किसी अन्य राजा ने नहीं किया था, और मंदिर को इस तरह से बहाल करता है कि यह वास्तव में वही दर्शाता है जो इसे सुलैमान के अधीन दर्शाना चाहिए था। दाऊद और सुलैमान की तरह ही, हिजकिय्याह मंदिर में सभी

योगदानों के लिए प्रावधान करता है, वह योगदानों के सभी प्रशासन के लिए प्रावधान करता है, और फिर हमें उस तरीके का सारांश मिलता है जिससे पूरे मंदिर को बहाल किया गया था। अब, जब आप इस अध्याय को पढ़ते हैं, तो उस तरीके के बारे में सोचें जिस तरह से सुलैमान के मंदिर को प्रस्तुत किया गया था।

दाऊद ने जो किया वह यह था कि उसने सारी तैयारियाँ कर लीं और सारी सामग्री इकट्ठी कर ली। फिर दाऊद ने लेवियों को उनके सभी अलग-अलग कामों, संगीतकारों, द्वारपालों, याजकों के लिए संगठित किया, ताकि सुलैमान आकर मंदिर का निर्माण कर सके क्योंकि सारी सामग्री के लिए प्रावधान मौजूद थे, और सभी सहायक कर्मियों के लिए संगठन मौजूद था। यह हिजकिय्याह में दोहराया गया है।

यह राजा वही करता है जो दाऊद और सुलैमान ने किया था। वह सभी आवश्यक योगदान देता है, और वह सभी प्रशासन के लिए प्रावधान करता है। मंदिर अब बिना किसी समझौते के वैसे ही बनना शुरू हो गया है जैसा सुलैमान के दिनों में होना चाहिए था। अब, इन सभी अच्छी बातों के बाद, हम उस कहानी पर आते हैं जो राजाओं और यशायाह में सबसे प्रमुख है, अर्थात् 701 में सन्हेरीब का हमला।

तो, इन सभी अच्छी बातों के बाद, सन्हेरीब विनाश के राजा के रूप में आता है, जो इन सभी को नष्ट करने वाला है। तो, इस अध्याय के पहले 23 छंद वास्तव में राजाओं के लगभग तीन अध्यायों में बताई गई और यशायाह में दोहराई गई सभी बातों को बहुत संक्षिप्त रूप में दोहराते हैं। अर्थात् यह वह तैयारी है जो हिजकिय्याह ने घेराबंदी के समय पानी के लिए की थी।

यह वह प्रावधान है जो उसने अशूरियों के हमले से बचाव के संबंध में किया था और जिस तरह से उसने विशेष रूप से परमेश्वर पर भरोसा किया था, और यही बात उसे इतना वफ़ादार बनाती है। इसलिए अगर हम राजाओं की कहानी पर वापस जाएँ, तो हमें बताया गया है कि कैसे ताना मारने वाले दीवार के पास आए, उन्होंने वही किया जो आक्रमणकारी सेनाएँ हमेशा करती हैं, घेरे हुए शहर के नागरिकों को मनाने की कोशिश की कि उन्हें बस आत्मसमर्पण कर देना चाहिए, कि अगर वे उनकी आकर्षक सेनाओं के सामने झुक जाते हैं, तो यह उनके लिए सबसे अच्छा होगा, और हो सकता है कि उनमें से कुछ गुलाम बन जाएँ, लेकिन यही शांति होगी। विजेता हमेशा दावा करते हैं कि वे वास्तव में शांति स्थापित कर रहे हैं, और यही वह काम है जो हिजकिय्याह के दिनों में यरूशलेम की दीवार के चारों ओर ये उपहास करने वाले कर रहे थे, और वहाँ हम हिजकिय्याह की कहानी जानते हैं कि कैसे, जब उसके पास कोई सुरक्षा उपाय नहीं बचा, तो उसने रबशाका के पत्रों को लिया, और उन्हें मंदिर में करूबों के सामने ले गया, और उन्हें फैला दिया, और उसने कहा, हे प्रभु, आप इन पत्रों को देख रहे हैं, और आप इन सभी धमकियों को देख रहे हैं।

और, बेशक, राजाओं की कहानी में, हम जानते हैं कि कैसे, एक रात में, प्रभु का दूत आया और उसने असीरियन सेना के 185,000 सैनिकों को मार गिराया। यह समझने की कोशिश में बहुत सारी ऊर्जा लगाई गई है कि इस घटना में ऐसा क्या हुआ होगा जिसने असीरियनों को यरूशलेम शहर को बंदी बनाने से रोका। एक बात जिस पर किसी भी तरह से संदेह नहीं किया जा सकता

है, वह यह है कि सन्हेरीब यरूशलेम को बंदी बनाने में सफल नहीं हुआ, और हम जानते हैं कि सन्हेरीब यरूशलेम को बंदी बनाने में सफल नहीं हुआ क्योंकि वह खुद ऐसा कहता है।

टेलर प्रिज्म या असीरियन इतिहास के किसी अन्य अभिलेख में, जिसे हम उपयोग करना चाहते हैं, सन्हेरीब ने दावा किया है कि उसने यहूदा प्रांत से 200,000 बंदी कैसे पकड़े और कैसे उसने हर किलेबंद शहर पर विजय प्राप्त की, और फिर उसने कहा, मैंने हिजकिय्याह को उसकी राजधानी यरूशलेम में एक पक्षी की तरह पिंजरे में बंद करके छोड़ दिया। अब, बेशक, असीरियन कभी पराजित नहीं होते, इसलिए सन्हेरीब अपने इतिहास में कभी यह स्वीकार नहीं करने जा रहा है कि वह पराजित हुआ था, लेकिन वास्तव में, बेशक, वह पराजित हुआ क्योंकि उसने यरूशलेम शहर नहीं लिया। यरूशलेम न केवल एक शहर के रूप में खड़ा रहा, बल्कि यह एक प्रांत के रूप में फलता-फूलता रहा और वास्तव में, असीरियन राष्ट्र से भी अधिक समय तक जीवित रहा और बेबीलोनियों के समय तक जीवित रहा।

तो, वास्तव में, सन्हेरीब हार गया था, लेकिन निश्चित रूप से, यह वह तरीका नहीं था जिस तरह से अश्शूरियों ने इसे प्रस्तुत करना चाहा था। इतिहासकार केवल इतना कहते हैं कि हिजकिय्याह केवल वफादार था और हिजकिय्याह की वफादारी के कारण ही परमेश्वर ने यरूशलेम को बचाया। अब, ऐसा नहीं है कि हिजकिय्याह बिना किसी परीक्षण के था, और इतिहासकार इन बातों का संकेत देता है, हालाँकि वह कहता है कि हिजकिय्याह इन परीक्षणों में भी वफादार था।

अब, किंग्स की कहानी दो छोटी कहानियों के साथ समाप्त होती है। ये दो छोटी कहानियाँ हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान घटित हुईं। वे किंग्स में दिए गए कालानुक्रमिक क्रम में नहीं घटित हुईं।

हम इसे मरोदक-बलदान के ऐतिहासिक संदर्भ से जानते हैं, जिसने हिजकिय्याह को अपनी श्रद्धांजलि भेजी और उस समय अश्शूरियों के खिलाफ बेबीलोन को गठबंधन करने की कोशिश में हिजकिय्याह के गठबंधन की मांग की। और इसलिए, हम जानते हैं कि यह सन्हेरीब से पहले की बात है। लेकिन यह वह समय है जब हिजकिय्याह बीमार हो गया था, और उसे भविष्यवक्ता यशायाह ने बताया था, तुम मरने वाले हो।

हिजकिय्याह को यह बहुत दर्दनाक लगा, और उसने प्रार्थना की क्योंकि उसे लगा कि यह उसके मरने का उचित समय नहीं है। और इसलिए, भविष्यवक्ता यशायाह उसके पास यह संदेश लेकर आता है कि प्रभु ने तुम्हें एक राहत दी है, और तुम्हारे जीवन में 15 साल और बढ़ जाएँगे, और इसके साथ ही तुम्हें एक संकेत भी मिलेगा। तो, यहाँ हिजकिय्याह की तुलना आहाज से की गई है।

जब नबी ने आहाज को कोई संकेत दिया तो उसने कहा, नहीं, मुझे किसी संकेत की जरूरत नहीं है। हिजकिय्याह ने कहा, संकेत मांगो, नहीं, तो ठीक है, अगर यही वादा है, तो संकेत क्या है? तो, हिजकिय्याह यहाँ अपने पूर्ववर्ती आहाज से पूरी तरह से अलग है। संकेत यह है कि आहाज के डायल में छाया पीछे की ओर जाती है, जो भी हो वे छाया की चाल से समय मापने के लिए इस्तेमाल करते थे, 15 डिग्री, 15 कदम।

कोई अन्य स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है, और हमें इस बात के लिए किसी अन्य स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है कि यह घटना, यह संकेत, वास्तव में कैसे हुआ। पूरा मुद्दा यह है कि हिजकिय्याह यहाँ वफादार था। और फिर, बेशक, मरोदक-बलदान और दूतावास का यह मामला था जहाँ हिजकिय्याह ने वास्तव में मरोदक-बलदान के दूतों की बात मान ली थी, और जिसके लिए यशायाह ने उसकी कड़ी निंदा की है।

लेकिन इतिहासकार केवल इतना ही कहते हैं कि हिजकिय्याह की परीक्षा के मामले में, अंत में, वह विश्वासयोग्य पाया गया। अब, यह हिजकिय्याह का प्रतिनिधित्व करने का एक सच्चा, उचित तरीका है क्योंकि यद्यपि राजाओं की कहानी मरोदक-बलदान के नोट पर समाप्त होती है, लेकिन सन्हेरीब के हमले के संबंध में इसका निष्कर्ष, जो कुछ वर्षों बाद हुआ, यह बहुत स्पष्ट करता है कि हिजकिय्याह ने उस विफलता को अपने जीवन में हार नहीं बनने दिया। उस बिंदु से, वह विश्वासयोग्य बन गया, और उसकी विश्वासयोग्यता विशेष रूप से इस तरह से दिखाई दी कि उसने सन्हेरीब के हमले के समय परमेश्वर पर भरोसा किया।

इसलिए, इतिहासकार ने राजाओं की कहानी की पूरी तरह से सही व्याख्या की है। राजाओं ने कहा कि हिजकिय्याह अब तक का सबसे वफादार राजा था, और इतिहास कहता है, हाँ, वह अब तक का सबसे वफादार राजा था, और देखो उसने क्या किया। उसने फसह को बहाल किया, उसने मंदिर को बहाल किया, और जब सन्हेरीब की यह बड़ी परीक्षा उस पर आई, तो वह वफादार पाया गया, और इन अन्य मामलों में वह खुद को विनम्र कर सका, और उसने अपनी वफादारी दिखाई।

तो, इतिहासकार हमें वास्तव में एक ऐसे व्यक्ति का सारांश देता है जो एक वफादार राजा है। वफादारी का मतलब असफलता के बिना नहीं है, और यह एक ऐसी चीज़ है जिसे हमें हमेशा याद रखना चाहिए। यह सवाल ही नहीं उठता कि हम असफल होने जा रहे हैं या नहीं।

हम इंसान हैं। हम सभी असफल होते हैं, हम में से हर कोई। किसी न किसी तरह से, हम असफल होते हैं, हम अचानक पकड़े जाते हैं, हम वो करते हैं जो हम नहीं करना चाहते थे।

सवाल यह है कि जब आप असफल हो जाते हैं तो आप क्या करेंगे? आप अपनी असफलता पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं? और राजा और इतिहास दोनों में, मुद्दा एक ही है। हिजकिय्याह अपनी असफलता को स्वीकार कर सकता था, लेकिन यह उसकी कहानी का अंत नहीं होने वाला था। और असफलता ही वह चीज़ थी जो उसकी विशेषता थी।

परमेश्वर के प्रति वफादार न होना और परमेश्वर पर भरोसा न करना ही उसकी विशेषता थी। और हिजकिय्याह इस बात का उदाहरण है कि आप कैसे असफल हो सकते हैं, कैसे आपकी परीक्षा ली जा सकती है, लेकिन कैसे आपको इस असफलता से बिल्कुल अलग किसी चीज़ के लिए याद किया जा सकता है। इसलिए हिजकिय्याह को याद किया जाता है, न कि मेरेडिथ बालदान के साथ जो हुआ उसके लिए।

राजाओं के लिए हिजकिय्याह और इतिहास के लिए हिजकिय्याह को इसलिए याद किया जाता है क्योंकि वह वफादार था। यही उसकी विरासत है। हमें खुद से पूछना चाहिए कि हमारी विरासत क्या होगी? और हमें यह कहना चाहिए कि हमारी सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा परमेश्वर के प्रति वफादारी की विरासत बनाना है।

इसका मतलब यह नहीं है कि इसमें कोई असफलता नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह है कि हमें हमारी वफादारी के लिए याद किया जाता है।

यह डॉ. ऑगस्ट कोंकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 23 है, वफादार राजा।